ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

128

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

सबलोग

जून 2024 • मूल्य ₹ 40

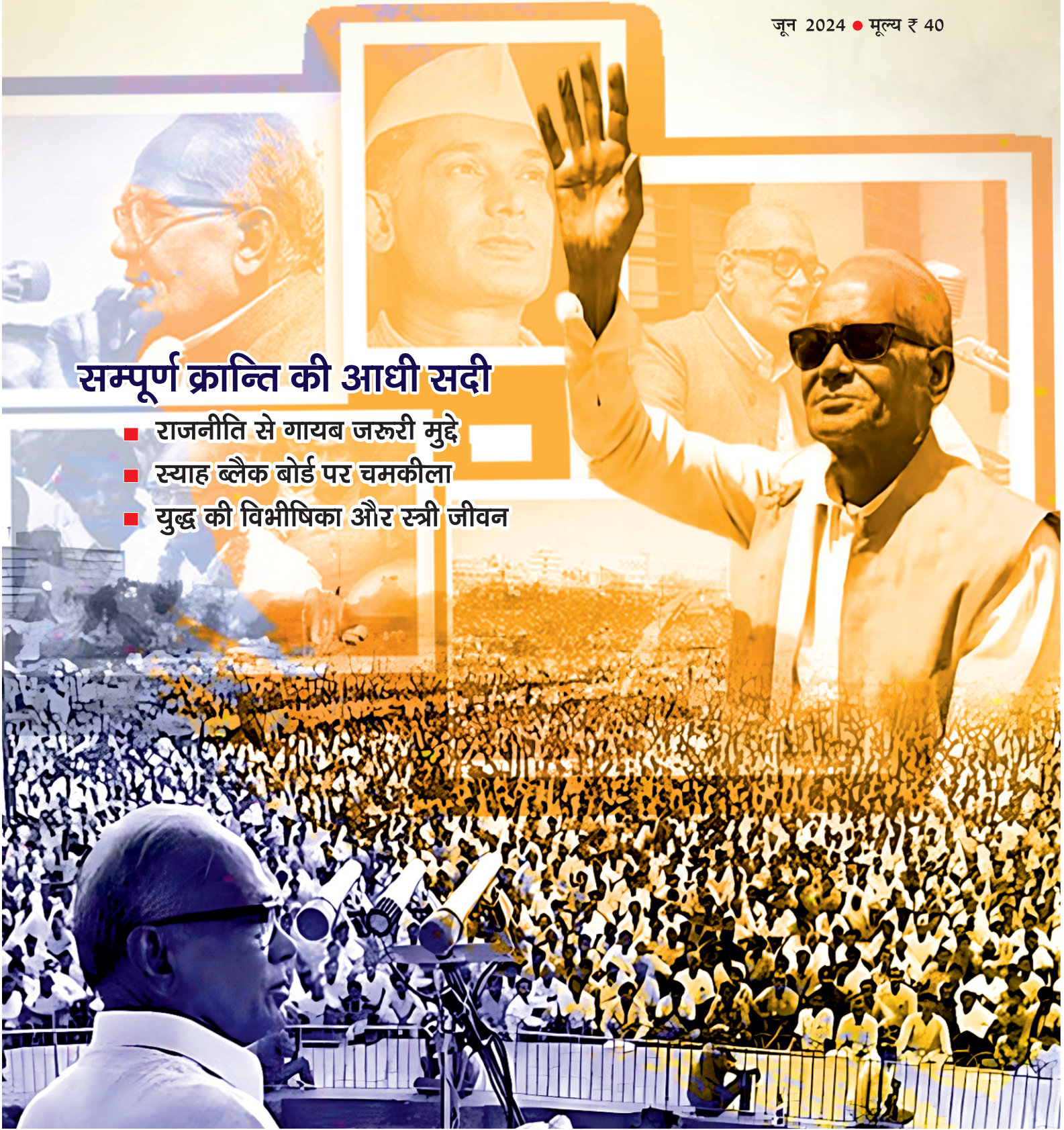

सम्पूर्ण क्रान्ति की आधी सदी

- राजनीति से गायब जरूरी मुद्दे
- स्याह ब्लैक बोर्ड पर चमकीला
- युद्ध की विभीषिका और स्त्री जीवन

मुनादी

खलक खुदा का, मुलुक बाश्शा का
हुकुम शहर कोतवाल का...
हर खासो-आम को आगाह किया जाता है
कि खबरदार रहें
और अपने-अपने किवाड़ों को अन्दर से
कुण्डी चढ़ाकर बन्द कर लें।
गिरा लें खिड़कियों के परदे
और बच्चों को बाहर सड़क पर न भेजें,
क्योंकि
एक बहत्तर बरस का बूढ़ा आदमी
अपनी काँपती कमजोर आवाज में
सड़कों पर सच बोलता हुआ निकल पड़ा है!

शहर का हर बशर वाकिफ है
कि पच्चीस साल से यह मुजिर है
कि हालात को हालात की तरह बयान किया जाए
कि चोर को चोर और हत्यारे को हत्यारा कहा जाए
कि मार खाते भले आदमी को
और अस्मत लुटाती औरत को
और भूख से पेट दबाए ढाँचे को
और जीप के नीचे कुचलते बच्चे को
बचाने की बेअदबी की जाए।
जीप अगर बाश्शा की है तो
उसे बच्चे के पेट पर से गुजरने का हक क्यों नहीं?
आखिर सड़क भी तो बाश्शा ने बनवायी है।
बुड्ढे के पीछे दौड़ पड़ने वाले अहसान-फरामोशों!
क्या तुम भूल गये कि बाश्शा ने
एक खूबसूरत माहौल दिया है जहाँ
भूख से ही सही, दिन में तुम्हें तारे नजर आते हैं
और फुटपाथों पर फरिश्तों के पंख रात भर
तुम पर छाँह किये रहते हैं
और हूरें हर लैम्पपोस्ट के नीचे खड़ी
मोटर वालों की ओर लपकती हैं
कि जन्नत तारी हो गयी है जमीं पर,
तुम्हें इस बुड्ढे के पीछे दौड़कर
भला और क्या हासिल होने वाला है?

आखिर क्या दुश्मनी है, तुम्हारी उन लोगों से
जो भले मानसों की तरह
अपनी-अपनी कुर्सी पर चुपचाप
बैठे-बैठे मुल्क की भलाई के लिए
रात-रात जागते हैं
और गाँव की नाली की मरम्मत के लिए,
मास्को, न्यूयार्क, टोकियो, लन्दन की खाक छानते
फकीरों की तरह भटकते रहते हैं...

शेष बैक इनर कवर पर...

सबलोग-128

वर्ष 15, अंक 4, मई 2024

प्रकाशन 25.05.2024

ISSN 2277-5897 SABLOG

PEER REVIEWED JOURNAL

सम्पादक

किशन कालजयी

संयुक्त सम्पादक

प्रकाश देवकुलिश

राजन अग्रवाल

ब्यूरो

उत्तर प्रदेश : शिवाशंकर पाण्डेय

मध्यप्रदेश : जावेद अनीस

बिहार : कुमार कृष्णन

उत्तराखण्ड : सुप्रिया रतूड़ी

झारखण्ड : विवेक आर्यन

समीक्षा समिति (Peer Review Committee)

आनन्द कुमार

सुबोध नारायण मालाकार

मणीन्द्र नाथ ठाकुर

सफदर इमाम कादरी

मधुरेश

आनन्द प्रधान

मंजु रानी सिंह

महादेव टोप्पो

विजय कुमार

आशा

सन्तोष कुमार शुक्ल

अखलाक 'आहन'

प्रबन्ध निदेशक

अभय कुमार झा

सम्पादकीय सम्पर्क

बी-3/44, तीसरा तल, सेक्टर-16,

रोहिणी, दिल्ली-110089

+ 918340436365

sablogmonthly@gmail.com, sablog.in

वेब सहायक : गुलशन कुमार चौधरी

सदस्यता शुल्क

एक अंक : 40 रुपए–वार्षिक : 450 रुपए

द्विवार्षिक : 900 रुपए–आजीवन : 5000 रुपए

सबलोग

खाता संख्या-49480200000045

बैंक ऑफ बड़ौदा,

शाखा-बादली, दिल्ली

IFSC-BARB0TRDBAD

(Fifth Character is Zero)

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिन्टर्स, 556 जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका अव्यावसायिक और सभी पद अवैतनिक।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिये न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

सम्पूर्ण क्रान्ति की आधी सदी

सम्पूर्ण क्रान्ति मेरी समझ में : **रामशरण** 4

असफल निर्मितियों के शव कल पहचाने जाएँगे : **मणिमाला** 8

जेपी आन्दोलन : लोकतन्त्र के लिए महासमर : **शिवदयाल** 10

सत्ता परिवर्तन तक सिमट गयी सम्पूर्ण क्रान्ति : **सुदीप ठाकुर** 14

स्वाधीन भारत, आपातकाल और आन्दोलन : **हितेन्द्र पटेल** 17

उत्तर सम्पूर्ण क्रान्ति दृश्यम : **मृत्युंजय श्रीवास्तव** 20

व्यवस्था परिवर्तन की वैचारिकी : **विजय कुमार** 22

एक नये आन्दोलन का इन्तजार : **विमल कुमार** 25

असम्पूर्ण ही रह गयी सम्पूर्ण क्रान्ति : **राकेश भारतीय** 27

सम्पूर्ण क्रान्ति सतत क्रान्ति है : **अनिल किशोर सहाय** 29

सृजनलोक

छह कविताएँ : **अनुकृति उपाध्याय,** टिप्पणी : **हृषीकेश सुलभ** 31

राज्य

उत्तर प्रदेश / काँग्रेस में लगा ग्रहण : **शिवाशंकर पाण्डेय** 33

झारखण्ड / राजनीति से गायब जरूरी मुद्दे : **विवेक आर्यन** 35

स्तम्भ

चतुर्दिक / 4 जून 2024 के बाद भारत : **रविभूषण** 37

यत्र-तत्र / एकाग्र तपश्चर्या में एक ऋषिवत साधक : **जय प्रकाश** 40

तीसरी घण्टी / मिथक का यथार्थ और संघर्ष : **राजेश कुमार** 43

कथित-अकथित / बारूद के ढेर की ओर बढ़ती चिनगारी : **धीरंजन मालवे** 46

कविताघर / जो कहा जाए, वह कैसे कहा जाए : **प्रियदर्शन** 48

विविध

उपन्यास अंश / सिंहासन खाली करो कि जनता आती है : **विनोद कुमार** 50

वक्तव्य / चौमुखी पहल से समाज में शान्ति : **राजगोपाल पीवी** 53

शख्सियत / प्रगतिकामी वैश्विक संस्कृति के अन्वेषक : **शैलेन्द्र चौहान** 55

स्त्रीकाल / युद्ध की विभीषिका और स्त्री-जीवन : **आकांक्षा** 57

सिनेमा / स्याह ब्लैक बोर्ड पर चमकीला : **रक्षा गीता** 60

आदिवासियत / विश्व आदिवासी समाज की परम्परा : **दीक्षा सिंह** 63

पुस्तक समीक्षा / एक दस्तावेज, एक आकलन : **पवन कुमार सिंह** 65

लिये लुकाठी हाथ / धरती पर चंदा : **निवास चन्द्र ठाकुर** 66

आवरण : **शशिकान्त सिंह**

अगला अंक : पर्यावरण और पारिस्थितिकी

सम्पूर्ण क्रान्ति मेरी समझ में

रामशरण

समाज में हर व्यक्ति का बिल्कुल एक जैसा समान होना कठिन है। यदि सबकी आय बिल्कुल एक जैसी तय कर दी जाए तो लोग अधिक योग्यता हासिल करने और अधिक मेहनत करने से बचेंगे। उन्हें इससे आजादी देनी होगी। समानता का आदर्श माडल कटे हुए खेत नहीं जंगल हो सकते हैं। जंगल में हर पेड़ को विकास की आजादी रहती है। पर छोटे पेड़ तेजी से बढ़ते हैं और बड़े पेड़ धीमी गति से। एक ऊँचाई तक जाने के बाद पेड़ों का बढ़ना रुक जाता है। इसलिए जंगल की ऊँचाई हमेशा बराबर रहती है।

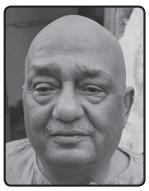

लेखक प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक और सक्रिय आन्दोलनकर्मी हैं।

+917631845101

ramsharan.bihar@gmail.com

उस दिन आकाश में बादल भरे हुए थे, जिससे दिन में भी अँधेरा जैसा छाया हुआ था। हम छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के साथी पटना के महिला चरखा समिति के घास भरे आँगन में कतारबद्ध खड़े थे और वाहिनी नायक जयप्रकाश नारायण जी की प्रतीक्षा कर रहे थे। आपातकाल समाप्त हो चुका था और जनता पार्टी की सरकार गिर चुकी थी। क्या सम्पूर्ण क्रान्ति का यही नतीजा निकलना था? हम लोग जानते थे कि अब वाहिनी नायक का मार्गदर्शन ज्यादा दिनों तक मिलने वाला नहीं है। हम में से कुछ साथी 30 की उम्र सीमा पार करने के कारण वाहिनी से अलग होने वाले थे, जिनमें मैं भी शामिल था। इसलिए यह हमारे लिए दीक्षान्त भाषण ही था। कुछ देर में ही जयप्रकाश जी सहारा लेते हुए आये और हम लोगों के सामने बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठ गये। उनके पास खड़े कुछ तीसोत्तर साथियों ने उनसे पूछा कि हम तो वाहिनी से अलग होने जा रहे हैं। अब हमें अलग होकर क्या करना चाहिए? जयप्रकाश जी ने अपने भाषण के दौरान इसका जो जवाब दिया वह बहुत अकल्पनीय और झटका देने वाला था। उन्होंने कहा कि ''जाओ सड़क खोदो।''

हम लोगों को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। हम सभी लोग स्तब्ध थे। अनेक साथी काफी निराश हो गये। लेकिन कुछ इस आदेश में छिपा हुआ सन्देश खोजने लगे। हम लोगों ने माना कि हमें यह निर्देश मिला है कि पुराने रास्ते को कोड़ कर खत्म कर दो और नयी सड़क बनाओ। तबसे मैं यही पहली सुलझाने की कोशिश में लगा रहा।

मेरी एक बड़ी कमजोरी किताबें नहीं पढ़ पाना रही है। फिर भी तरुण शान्ति सेना, संघर्ष वाहिनी और गंगा मुक्ति आन्दोलन से जुड़ा हुआ रहने के कारण मेरी जो समझ विकसित हुई है उसके आधार पर कुछ सूत्र ढूँढ़े हैं, जिनकी सहायता से सम्पूर्ण क्रान्ति को एक हद तक समझा जा सकता है। हालाँकि, इसमें सुधार की काफी गुंजाइश है।

क्यों चाहिए सम्पूर्ण क्रान्ति?

1974 के छात्र आन्दोलन की शुरूआत के पहले पूरे देश की जनता में पक्ष और विपक्ष दोनों के प्रति अविश्वास पैदा हो गया था, जो लोकतन्त्र के लिए खतरनाक था। तब जयप्रकाश जी ने 'यूथ फार डेमोक्रेसी' के नाम से एक अपील जारी की। उसके बाद गुजरात के युवकों ने महँगाई के सवाल पर 'नव निर्माण आन्दोलन' प्रारम्भ किया, जो व्यापक होता चला गया। इस आन्दोलन के कारण गुजरात की सरकार गिरती, उसके पहले ही बिहार के युवा संगठनों ने मिलकर छात्र संघर्ष समिति का गठन कर आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ में इसकी अनेक माँगें थीं। पर अन्त में सिर्फ चार माँगें बची थीं– महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और कुशिक्षा का उन्मूलन। इन समस्याओं का समाधान होना तो दूर, इन्होंने आज विकराल रूप

धारण कर लिया है। लेकिन जब आन्दोलन का नेतृत्व जयप्रकाश जी के हाथों में आया तो उन्होंने इसके उद्देश्य को व्यापक कर दिया। उन्होंने 5 जून को पटना के गाँधी मैदान की विशालतम सभा में घोषित किया कि हमारा लक्ष्य है 'सम्पूर्ण क्रान्ति'।

सम्पूर्ण क्रान्ति क्या है?

जब व्यक्ति, समाज, देश या दुनिया में बहुत बड़ा परिवर्तन आए तो लोग उसे क्रान्ति कहते हैं। जैसे हर ठोस पदार्थ में लम्बाई-चौड़ाई और गहराई या ऊँचाई होती है वैसे ही जिस परिवर्तन में ये तीन तत्त्व हों तभी वह क्रान्ति कहलाएगी–

1. गहराई–जो परिवर्तन साधारण हो, जिसमें गम्भीरता नहीं हो, उसे क्रान्ति नहीं कहा जा सकता।

2. लम्बाई–जो परिवर्तन क्षणिक है, दीर्घकालिक नहीं है, उसे क्रान्ति नहीं कहा जा सकता।

3. चौड़ाई–जो परिवर्तन व्यापक असर डालने वाला नहीं हो उसे क्रान्ति नहीं कहा जा सकता।

लेकिन जब क्रान्ति समग्र हो, सतत हो, सप्त क्रान्ति हो, तभी उस बहुआयामी क्रान्ति को सम्पूर्ण क्रान्ति कहेंगे।

सम्पूर्ण क्रान्ति की कसौटी क्या है?

क्रान्तियाँ अलग-अलग लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए की जा सकती हैं और उनका तरीका भी हमेशा एक जैसा नहीं होता है। क्रान्ति यदि संकीर्ण उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाएगी तो उसका परिणाम अच्छा भी हो सकता है बुरा भी। अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन आदि में क्रान्ति कुछ खास उद्देश्यों के लिए की गयी थी। अमेरिका में आजादी मुख्य सवाल था, लेकिन समानता को महत्त्व नहीं मिला। रूस में समानता मुख्य सवाल था, लेकिन आजादी को महत्त्व नहीं मिला। फ्रांस में स्वतन्त्रता समानता और बन्धुत्व को प्रमुख लक्ष्य घोषित किया गया, पर व्यवहार में हिंसा ने बन्धुत्व को निष्प्रभावी बना दिया। इन क्रान्तियों ने अन्ततः नेपोलियन, स्टालिन जैसे तानाशाह को सत्ता सौप दी।

जयप्रकाश जी प्रारम्भ में स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़े थे। उसके बाद अमेरिका गये और अमेरिका की असमानता देखी। फिर उन्होंने साम्यवाद का अध्ययन किया पर रुसी क्रान्ति के बाद हुए दमन ने उन्हें हिला दिया। फिर बाद के समय में उन्होंने समाजवादी आन्दोलन में हिस्सा लिया पर वहाँ भी बन्धुत्व की कमी महसूस की। अन्त में भूदान आन्दोलन में बन्धुत्व की ताकत को समझा, पर इससे भी देश की समस्या का समाधान नहीं मिला। इस तरह से उन्होंने महसूस किया की सिर्फ बराबरी या आजादी या भाईचारे को लक्ष्य बनाने से काम नहीं चलने वाला है। इसीलिए उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा दिया अर्थात ऐसी क्रान्ति जिसका लक्ष्य स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व तीनों हो।

स्वतन्त्रता क्या है?

हर आदमी अपनी इच्छा को और समस्याओं को समझता है और अपनी क्षमता के अनुसार उसे दूर करने की कोशिश करता है। जंगली अवस्था में उसके ज्ञान और संसाधन कम थे पर उसे पूरी आजादी थी। जैसे-जैसे राज सत्ता मजबूत होती गयी उसकी आजादी छिनती गयी। राजाओं नवाबों के समय में आम नागरिक के पास कोई अधिकार नहीं होता था। राजा अपने राज्य में किसी भी व्यक्ति की सम्पत्ति, पत्नी और जिन्दगी छीन सकता था। राजा के लिए कोई नियम नहीं था। जो वह बोलता, वही कानून था। हमारे बगल में नेपाल है, जहाँ हाल तक राजशाही थी। आम आदमी हमेशा डरा हुआ रहता था। तानाशाही तो उससे भी बुरी तरह कुचल कर रखती है। उससे भी बुरा है विदेशी शासन। भारत ने अँग्रेजों के शासन में बहुत अत्याचार सहे। इसलिए पूरे देश के नागरिकों ने गाँधी जी के नेतृत्व में आजादी के लिए लम्बा आन्दोलन किया। पश्चिम में लड़ाई में हार गये लोगों और उनकी औरतों को गुलाम बना लिया जाता था और जिन्दगी भर बिना मजदूरी दिए काम कराया जाता था। भारत में भी राजा हरिश्चन्द्र की कहानी में गुलामी की दुर्दशा द्रवित कर देती है।

जो व्यक्ति आजाद नहीं है उसको अपने शोषण दमन और अन्याय का प्रतिकार करने की छूट नहीं रहती। आदमी अपनी इच्छा से अपनी भलाई का, अपने आनन्द का, अपने और दूसरे लोगों की भलाई का काम भी नहीं कर सकता है। जो आदमी किसी भी सहायता के लिए किसी पर निर्भर हो जाता है, वह अपनी आजादी खो देता है। परिवार में भी पत्नी और बच्चों पर पिता का हुक्म चलता है। लेकिन पत्नी कमाने वाली हो तो वह स्वतन्त्र हो सकती है। जो समूह या देश दूसरों पर निर्भर करता है वह सहायता देने वाले के आदेश को मानने के लिए मजबूर हो जाता है। भारत भी वर्ल्ड बैंक से सहायता लेने के लिए उसकी शर्तें मानता रहा है।

गाँधी जी ने जब चम्पारण के किसानों को अँग्रेजों की गुलामी में नील की खेती करते देखा तभी स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव रखी गयी। आजादी विकास की प्रमुख शर्त है। अमेरिका के विकास का कारण आजादी का मूल्य ही है। जब हमें काम करने तथा अपने श्रम का लाभ उठाने की आजादी मिलती है तो हम पूरी ताकत लगा देते हैं। इससे हमारा और देश का विकास होता है। यह विचार पूँजीवाद के मूल में है। इसलिए पूँजीपति हमेशा आजादी की माँग करते हैं। वे हमेशा कोटा परमिट राज का विरोध करते हैं। इंसपेक्टर राज का विरोध करते हैं। लेकिन इस आजादी का लाभ उठाकर पूँजीपति लोग हजारों मजदूरों की आजादी हड़प लेते हैं। उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं। मिलावट आदि करते हैं। इसलिए आजादी के साथ समानता और भाईचारा जरूरी है। समाज में आर्थिक गैरबराबरी सबसे चुभती है।

आज मजदूर और कर्मचारी अपनी आजादी को बेचकर ही पैसा कमाते हैं। औद्योगिक क्रान्ति के बाद मजदूरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार होता था। उसके पहले बँधुआ मजदूरों का भी बहुत शोषण दमन होता था। उनके वर्ग संघर्ष से स्थिति में सुधार आया है।

समता क्या है?

हमारा समाज, देश और दुनिया अलग-अलग वर्गों में बँटी हुई है–महिला, पुरुष, काले गोरे, गरीब अमीर, मालिक मजदूर, सवर्ण, पिछड़े, दलित, आदिवासी, हिन्दू मुसलमान आदि। रेखागणित के वर्ग की तरह एक समान समय में, समान क्षमता और समान समस्या वाले लोगों का एक वर्ग होता है। एक वर्ग के अन्दर भी कई वर्ग होते हैं। जैसे मजदूरों के वर्ग के अन्दर उद्योग के अनुसार